17-5-67 ओम शान्ति प्रातःक्लास बुधवार

सारे सृष्टी चक्र में वो ड्रामा में बाप एक ही वार आते है। और कोई सत्संग आदि में ऐसे नही समझते होंगे। ना कोई बाप है ना वो बच्चे है। वो तो वास्तव में फालोवर्स भी नही है। सब झूठ ही झूठ है। यहां तो बच्चे भी हो तो स्टुडेन्टस भी हो तो फालोवर्स भी हो। बच्चो को साथ ले जायेंगे। बाप जायेंगे तो फिर बच्चे भी इस छी-2 दुनियां से जाकर अपनी गुल-गुल दुनियां में राज्य करेंगे। यह तुम बच्चो की बुधी मे आना चाहिये। इसमे अन्दर रहने वाली जो आत्मा है वो बहुत खुश होती है। तुम्हारी आत्मा को बहुत खुशी होनी चाहिये। बेहद का बाप आया हुआ है कि सबका बाप है। यह भी सिर्फ तुम बच्चो को ही समझ है। बाकी सारी दुनिया तो तो ये समझ ही बेसमझ है। बाप बैठ तुमको समझाते है कि रावण ने तुमको कितना बेसमझदार बना दिया है। बाप आकर समझदार बनाते है। सारे विश्व पर राज्य करने लायक इतने समझदार बनते हो। यह स्टुडेन्ट लाइफ भी एक ही बार होती है। जबकि भगवान आकर पढ़ाते है। तुम्हारी बुधी मे यह है। वो जो अपने सारे दिन धन्धे धोरी आदि में ही फंसे रहते है उनको कब बुधी मे यह आ नही सकता कि भगवान हमको पढ़ाते है। उनको तो अपना धन्धा आदि ही याद रहता है। तो तुम बच्चे जबकि जानते हो कि भगवान हमको पढ़ाते है तो बच्चो को सदैव कितना हर्षित रहना चाहिये। और तो सब है पाई पैसे वालों के बच्चे। मिट्टी मे मिलने वालों की औलाद। यहां तो तुम बच्चो को बहुत खुशी रहनी चाहिये। कोई तो बहुत हर्षित रहते है। कोई बच्चे कहते है कि बाबा हमारी बुद्धि नही चलती है यह होता है। और बुद्धि कोई बहुत थोड़ी है। तो जैसे कि भक्ति मार्ग में साधु सन्त आदि के पास भी जाते है तो कहेंगे कि हमको भगवान कैसे मिले परन्तु वो जानते तो कुछ भी नही है ना। सिर्फ उंगली से ऐसे इशारा करेंगे कि भगवान को याद करो। बस। [illegible] भी नही जानते है यह ज्ञान [illegible] फिर भी भूल जाते है। ऐसे नही कि तुम्हारे मे भी सब बाप और रचना को जानते है। कोई-2 की चलन ऐसी चलती है जो कि बात मत पूछो। वो नशा ही उड़ जाता है। अभी तुम बच्चो का पुरानी दुनियां का तो जैसे कि है ही नही। तुम जानते हो कि कलियुग से दुनियां से अब पैर उठ गया है। बोट का लंगर उठ गया है। अब हम जा रहे है। बाप हमको कहां ले जायेंगे वो भी बुधी मे है। क्योकि बाप खैवया भी है तो बागवान भी है। कांटो से फूल बनाते है। उन जैसा बागवान कोई है नही। कांटो को फूल बना दिया यह जादूगरी कोई कम है। कौड़ी तुल्य आत्मा को हीरे तुल्य बनाते है। आजकल जादूगरी बहुत निकली हुई है। यह है ही ठगी की दुनियां। बाप है सतगुरू। कहते भी है सतगुरू अकाल। बहुत धुन से कहते है। अब जब फिर खुद कहते है कि सतगुरू है एक है। सर्व का सदगति दाता एक है तो फिर अपने को गुरू क्यो कहलाते हो। ना वो समझते है ना ही चेले लोग भी समझ सकते है। इस पुरानी दुनियां में रखा ही क्या है। कोई को जब पता होता है कि बाप नया मकान बना रहे है तो कौन मूर्ख होगा जो नेय घर को नफरत और पुराने से प्रीत रखेगा। बुधी मे नया घर ही याद रहता है। अब तो तुम हो बेहद बाप के बच्चे। तुम जानते हो कि अब हम अपने नयी दुनियां में चलते है। नयी दुनियां का कितना नाम है। सतयुग, हेवन, पैराडाइज, कृष्ण पुरी और विष्णु पुरी बैकुण्ठ स्वर्ग। पुरानी दुनियां का क्या नाम है? क्या कहेंगे पुरानी दुनियां में तो दुःख ही दुःख है। इनका नाम ही है हेल। कांटो का जंगल का जंगल रौरव नर्क। इनका भी अर्थ कोई भी विद्वान पण्डित समझते नही है। पत्थर बुधी है ना। भारत का ही देखो क्या हाल है। बाप कहते है कि सब पत्थर बुधी है। सतयुग मे सब है पारस बुधी। यथा राजा रानी तथा प्रजा। यहां सब है पत्थर बुधी। यहां तो है ही प्रजा का राज्य। इसलिये ही सभी की इसटैम्प्स विलायत मे सिर्फ राजा रानी का ही इटैम्प बनाते है। अभी सिर्फ रानी का ही बनाते है। राजा साथ मे

ये नही देते है। क्योंकि वो है तो प्रजा होने का ना। उनसे दिल लग गई तो शादी कर ली। इसलिये उ राजा थोडेई कहेंगे। तो तुम बच्चों की बुधी मे यह रखना चाहिये कि ऊंच ते ऊंच है बाप। फिर सेकिंड नम्बर मे ऊंच ते ऊंच कौन? ब्रह्मा विष्णु शंकार की तो कोई ऊंचाई ही नही। ऊंचाई तो निचाई भी है। शंकर का कुछ भी नही है। ऊंच ते ऊंच है भगवान। उनका तो गायन है। शंकर जी तो पत्रावच्च आद ते कैसी बना दी है। पीते थे धतुरा खाते थे। यह भी तो किसीकी इन्सल्ट करना ही है ना। कोई सुने तो कहेंगे भारतवासि हिन्दुओं का यह है हाल। वहाँ तो यह बात ही नही होती। यह अपने धर्म को ही भूले हुये है। अपने देवताओं के लिए ही क्या-2 कहते रहते है। कितनी बेइज्जती करते है। तब बाप कहते है कि मेरी भी बेइज्जती, शंकर की भी बेइज्जती, ब्रह्मा की भी बेइज्जती। विष्णु की नही करते है। वास्तव मे गुप्त कहेंगे। क्योंकि विष्णु ही राधा कृष्ण है। उनकी करते तो भी अच्छा था। छोटा बच्चा तो महात्मा से भी ऊंचा गाया गया है। वो तो पाप आद करके पीछे सन्यासी बनते है। वो तो छोटा बच्चा है ही पवित्र। पाप आद को जानते ही नही। तो ऊंच ते ऊंच है शिव बाबा फिर ब्रह्मा, विष्णु। शंकर को तो गालियां ही देते है। यह भी बिचारो को तो पता नही कि प्रजापिता ब्रह्मा कहाँ होना चाहिए प्रजापिता ब्रह्मा को तो दिखाते भी शरीर धारी है। अजमेर मे उनका मंदिर भी है। दाढी मूंछ देते है ब्रह्मा को। विष्णु और शंकर की तो क्लीन सेव रखते है। तो यह समझने की बात है कि प्रजापिता ब्रह्मा सूक्ष्म वतन मे कैसे होगा। वो तो यहाँ होना चाहिये। इस समय ब्रह्मा की कितनी सन्तान है। लगा हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियां। इतने ढेरे है। तो प्रजापिता ब्रह्मा भी होगा। चेतन है तो जरूर कुछ करते भी होंगे। क्या प्रजापिता ब्रह्मा बच्चे ही पैदा करते है या और भी कुछ करते है। भल आदी देवी सरस्वती, आदी देव ब्रह्मा कहते है परन्तु पता किसको भी नही है कि क्या है। रचता है तो जरूर यहाँ होकर गया होगा। जरूर ब्रह्मा को शिव बाबा ने ही एडाप्ट किया होगा। नहीं तो ब्रह्मा कहाँ से आये। यह नई बाते है ना। जब तक बाप नही आये तब तक कोई जान नही सकते। जिनका जो पार्ट है वो ही बजाते है। बुध ने क्या पार्ट बजाया। किसीको भी पता नही है। कब आया क्या आकर किया कोई नही जानते है। तुम अभी जानते हो कि पोप ने क्या आकर किया है। क्या वो गुरू है? टीचर है? बाप है? नही। कुछ भी नही है। सदगति तो दे नही सकते। वो तो सिर्फ अपने धर्म के रचता ठहरे। गुरू नही। बाप बच्चों को रचता है फिर पढाते है। यह बाप टीचर गुरू तीनो ही है। दूसरे को थोडेई कहेंगे कि तुम पढाओ। और कोई पास यह नालेज है ही नही। बेहद का बाप ही ज्ञान का सागर है। उनकी ही महिमा गाई जाती है कि पवित्रता का सागर। सुख का सागर। और कोई को तुम ज्ञान का सागर नही कहेंगे। इनको भी नही कहेंगे सिवाय एक के। ज्ञान का सागर एक ही है तो जरूर ज्ञान वो ही सुनायेंगे। बाप ने ही तुमको राज्यभाग दिया था। बाप कहते है तुम फिर 5000 वर्ष बाद आकर मिले हो। बच्चे भी कहते है कि बाबा हम आपसे अनेक बार मिले है। तो कितनी ना खुशी होनी चाहिये। जिनको सारी दुनियाँ ढूंढती रहती है। वो तुमको मिल गये है। कितना भी कोई मारे पीटे अन्दर मे तो वो खुशी है ना। शिव बाबा से मिलने की याद तो आयेगी ना। याद से ही सारे पाप कटते है। अबलाओं बान्धेलियों के तो और ही जास्ती कटते है। क्यों कि वो शिव बाबा को जास्ती याद करती है। अत्याचार होते है तो बुधी शिव बाबा तरफ चली जाती है। शिव बाबा रक्षा करो। तो याद करना अच्छा है ना। रोज मार खाओ शिव बाबा को तो याद करेंगे ना। अबलाओं पर अत्याचार गाया हुआ है। मुश्किलात है तो याद तो करते है ना। कहते भी है ना गंगा जल मुख मे हो गंगा का तट हो तब प्राण तन से निकले। जब मार मिलती है तो तुमको अल्फ और बे ही याद आता है। बस। बाबा कहने से जरूर वर्सा याद आवेगा। ऐसा कोई जनावर भी नही होगा जिनको बाबा कहने पर वर्सा याद नही पड़ता हो।